नाभादास

जन्म	**:**	**1570 अनुमानित ।**
निधन	**:**	**अज्ञात, (1600 तक वर्तमान) ।**
जन्म-स्थान	**:**	**सांप्रदायिक मान्यता के अनुसार दक्षिण भारत में, शैशव में पिता की मृत्यु और अकाल के कारण माता के साथ जयपुर (राजस्थान) में प्रवास । दुर्योगवश माता से भी बिछोह ।**
शिक्षा	**:**	**गुरु और प्रतिपालक की देख-रेख में स्वाध्याय, सत्संग द्वारा ज्ञानार्जन ।**
अभिरुचि	**:**	**लोकभ्रमण, भगवद्‌भक्ति, काव्य रचना, वैष्णव दर्शन-चिंतन में विशेष रुचि ।**
दीक्षागुरु	**:**	**स्वामी अग्रदास (अग्रअली), जो स्वामी रामानंद की शिष्य परंपरा के प्रसिद्ध कवि थे ।**
स्थाई निवास	**:**	**वृंदावन ।**
कृतियाँ	**:**	**भक्तमाल (रचनाकाल 1585-1596 निर्धारित) अष्टयाम (ब्रजभाषा गद्य में) अष्टयाम ('रामचरितमानस' की दोहा-चौपाई शैली में) रामचरित संबंधी प्रकीर्ण पदों का संग्रह ।**
विशेष	**:**	**कवि नाभादास की पारिवारिक-सामाजिक पृष्ठभूमि अधिकतर विद्वानों के मुताबिक दलित वर्ग की थी ।**

नाभादास सगुणोपासक रामभक्त कवि थे । उनकी भक्ति प्रचलित रामभक्ति से थोड़ी भिन्न थी । उसमें मर्यादा के स्थान पर माधुर्यभाव का पुट था । वे गोस्वामी तुलसीदास के समकालीन थे और स्वामी रामानंद की ही शिष्य परंपरा के संत कृष्ण दास पयहारी के प्रशिष्य और भक्तकवि अग्रदास के शिष्य थे । इस तरह वे वैष्णवों के एक निश्चित संप्रदाय में दीक्षित थे, किंतु उनकी सोच और मान्यताओं में किसी तरह की संकीर्णता नहीं थी । पक्षपात, दुराग्रह या कट्टरता से वे पूर्णतया मुक्त एक भावुक, सहृदय, विवेकसंपन्न सच्चे वैष्णव थे । प्रसिद्ध कृति 'भक्तमाल' भक्तकवि नाभादास के शील, सोच और मानस का निर्मल दर्पण है । अविचल भगवद्‌भक्ति, भक्तचरित्र और भक्तों की स्मृतियाँ; नाभादास का अनुभव-सर्वस्व यही है । गार्हस्थ्य, सामाजिक-सांसारिक जीवन, विस्तृत और जटिल मानव संबंध इत्यादि का उन्हें अनुभव नहीं था । वे एक विरक्त जीवन जीते आए संत थे । स्पष्टत: उनके अनुभव के उस छोटे दायरे में ही उन्होंने अपनी अभिरुचि, ज्ञान, विवेक, भाव-प्रसार आदि के द्वारा प्रतिभा का प्रकर्ष उपस्थित कर दिया है । 'भक्तमाल' जिसकी आगे परंपरा चल पड़ी, यह प्रमाणित करता है ।

'भक्तमाल', जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, भक्त चरित्रों की माला है । उसमें नाभादास के पूर्ववर्ती और समवर्ती वैष्णव भक्तों के चरित वर्णित हैं । भक्तों के चयन में धर्म-संप्रदाय-जाति-लिंग और निर्गुण-सगुण आदि के विभेदकारी आग्रहों को महत्त्व न देते हुए केवल वैष्णवता को ही ध्यान में रखा गया है । यह वैष्णव भक्ति के अनुरूप ही है जिसमें

''जाति-पाँति पूछै नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि के होई'' जैसा क्रांतिकारी उद्घोष है । 'भक्तमाल' में वर्णित सभी भक्त कवि नहीं हैं, किंतु भक्तकवियों की संख्या कम नहीं है । संपूर्ण 'भक्तमाल' छप्पय छंद में निबद्ध है । छप्पय एक छंद है जो छह पंक्तियों का गेय पद होता है । इसमें 316 छप्पयों में 200 भक्तों के चरित वर्णित हैं । ये छप्पय नाभादास की तलस्पर्शिणी अंतर्दृष्टि, मर्मग्राहिणी प्रज्ञा, सारग्राही चिंतन और विदग्ध भाषा-शैली के नमूने हैं । इनके पीछे कवि के विशाल अध्ययन, सूक्ष्म पर्यवेक्षण, प्रदीर्घ मनन और अंतरंग अनुशीलन छिपे हुए हैं । ये छप्पय नाभादास की सहृदय आलोचनात्मक प्रतिभा के भी विशेष प्रमाण हैं । अनेक छप्पयों द्वारा मध्यकाल में ही आधुनिक अर्थों में हिंदी आलोचना का नाभादास ने न केवल बीजवपन किया था बल्कि सांकेतिक रूप में अग्रिम पथ-निर्देश भी कर दिया था । रीतिकाल के तथाकथित शास्त्रीय काव्यचिंतन को देखते हुए नाभादास का क्रांतिकारी महत्त्व स्पष्ट हो जाता है ।

यहाँ कबीर और सूर पर लिखे गए छप्पय 'भक्तमाल' से संकलित हैं । वैष्णव भक्ति की नितांत भिन्न दो शाखाओं के इन महान भक्तकवियों पर लिखे गए ये छंद ऊपर कही गई बातों के सटीक प्रमाण हैं । इन कवियों से संबंधित अब तक के संपूर्ण अध्ययन-विवेचन के सार-सूत्र इन छंदों में कैसे पूर्वकथित हैं यह देखना विस्मयकारी और प्रीतिकर है । ऐसा प्रतीत होता है, गोया आगे की शतियों में इन कवियों के अध्ययन-विवेचन की रूपरेखा जैसे तय कर दी गई हो ।

◆ ◆ ◆

"नाभादास ने भक्तों के परिचय में जिस समास शैली का परिचय दिया है, वह उनके गंभीर चिंतन-मनन का परिणाम है । जिन भक्तों का परिचय उन्होंने लिखा है उनकी रचना-शैली, काव्यकला, भक्ति पद्धति एवं अन्य विशिष्टताओं आदि को प्रायः एक ही छप्पय में कूट-कूटकर समाविष्ट कर दिया है ।

– विजयेंद्र स्नातक

भक्तमाल मध्ययुग के वैष्णव आंदोलन की रूपरेखा समझने के लिए सबसे अधिक प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है ।"

– माताप्रसाद गुप्त

छप्पय

कबीर

भगति विमुख जे धर्म सो सब अधर्म करि गाए ।
योग यज्ञ व्रत दान भजन बिनु तुच्छ दिखाए ।।
हिंदू तुरक प्रमान रमैनी सबदी साखी ।
पक्षपात नहिं बचन सबहिके हितकी भाषी ।।
आरूढ़ दशा है जगत पै, मुख देखी नाहीं भनी ।
कबीर कानि राखी नहीं, वर्णाश्रम षट दर्शनी ।

सूरदास

उक्ति चौज अनुप्रास वर्ण अस्थिति अतिभारी ।
वचन प्रीति निर्वही अर्थ अद्‌भुत तुकधारी ।।
प्रतिबिंबित दिवि दृष्टि हृदय हरि लीला भासी ।
जन्म कर्म गुन रूप सबहि रसना परकासी ।।
विमल बुद्धि हो तासुकी, जो यह गुन श्रवननि धरै ।
सूर कवित सुनि कौन कवि, जो नहिं शिरचालन करै ।

अभ्यास

छप्पय के साथ

1. नाभादास ने छप्पय में कबीर की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है ? उनकी क्रम से सूची बनाइए ।
2. 'मुख देखी नाहीं भनी' का क्या अर्थ है ? कबीर पर यह कैसे लागू होता है ?
3. सूर के काव्य की किन विशेषताओं का उल्लेख कवि ने किया है ?
4. अर्थ स्पष्ट करें –
   (क) सूर कवित्त सुनि कौन कवि, जो नहिं शिरचालन करै ।
   (ख) भगति विमुख जे धर्म सो सब अधर्म करि गाए ।
5. 'पक्षपात नहीं वचन सबहि के हित की भाषी ।' इस पंक्ति में कबीर के किस गुण का परिचय दिया गया है ?
6. कविता में तुक का क्या महत्त्व है ? इन छप्पयों के संदर्भ में स्पष्ट करें ।
7. 'कबीर कानि राखी नहीं' से क्या तात्पर्य है ?
8. कबीर ने भक्ति को कितना महत्त्व दिया ?

छप्पय के आस-पास

1. नाभादास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संबंध में विशेष जानकारी एकत्र करें ।
2. कबीर एक क्रांतिकारी कवि थे । आप दिगंत (भाग - 1) में इनके पद पढ़ चुके हैं । नाभादास द्वारा बताई गई विशेषताओं का साम्य उन पदों में ढूँढ़ें । इसी तरह सूर के पदों के साथ भी इन विशेषताओं का मिलान करें।
3. मीरा ने भी 'कुल की कानि' की परवाह नहीं की । कबीर और मीरा में समानताएँ और असमानताएँ क्या हैं ? विचार करते हुए बताएँ ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखें –
   तुच्छ, हित, पक्षपात, गुण, उक्ति
2. वाक्य प्रयोग द्वारा इन शब्दों का लिंग निर्णय करें–
   वचन, मुख्य, यज्ञ, अर्थ, कवि, बुद्धि
3. विमल में 'वि' उपसर्ग है । इस उपसर्ग से पाँच अन्य शब्द बनाएँ ।
4. पठित छप्पय से अनुप्रास अलंकार के उदाहरण चुनें ।
5. 'रसना' का पर्यायवाची शब्द लिखें ।

शब्द निधि

आरूढ़	:	सवार	भासी	:	आभासित हुई, प्रत्यक्ष हुई
दशाह्वै	:	दशा में होकर	रसना	:	जिह्वा
षटदर्शनी	:	षड्दर्शन, भारत के प्रसिद्ध छह दर्शन	परकासी	:	प्रकाशित किया
चौज	:	चमत्कार	तासुकी	:	उसकी
भनी	:	वर्णन की	श्रवणनि	:	कानों में
दिवि	:	दिव्य	शिरचालन	:	सिर डुलाना